व्याख्यान

लेखक परिचय :

स्वामी विवेकानन्द

उच्च कोटि के दार्शनिक व विचारक, विलक्षण प्रतिभा के धनी स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी (पौष संक्राति) सन् 1863 में कलकत्ता में हुआ था। इनके पिता का नाम विश्वनाथ एवं माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। इनका बचपन का नाम नरेन्द्र देव था। नरेन्द्र बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे तथा बड़े ही मनोयोग से पठन-पाठन करते थे। इन्होंने बाल्यकाल में ही रामायण, महाभारत जैसे ग्रन्थों के अनेक प्रसंग कंठस्थ कर लिए थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। प्रवेशिका के दो वर्ष के पाठ्यक्रम को घोर परिश्रम से एक वर्ष में पूरा कर स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। तत्पश्चात् वह मैट्रोपलटन इंस्टीट्यूट जाने लगे। अपनी वक्तव्य क्षमता के कारण संसार भर में धाक जमाने वाले स्वामी विवेकानन्द का वक्तव्य गुण किशोर अवस्था में ही दिखाई देने लगा। रामकृष्ण परमहंस का नरेन्द्र पर काफी प्रभाव पड़ा। सर्वसम्मति से स्वामी विवेकानन्द को मिशन का सभापति बना दिया गया। उनका मानना था - जब लोहा गर्म हो, तभी उस पर चोट लगानी चाहिए। सुस्ती की कोई जरूरत नहीं। ईर्ष्या और अहंकार को सदा के लिए गंगा में डुबा दो। कार्यक्षेत्र में महाशक्ति के साथ आ जाओ। काम, काम, काम बस यही मूल मंत्र है। विषम परिस्थितियों में अमेरिका जाकर विश्वधर्म सम्मेलन में भारत की धर्म ध्वजा फैलाने वाले सुन्दर, बलिष्ठ नरेन्द्र ने अपना तन-मन-धन सब कुछ भारत के गौरव के लिए बलिदान कर दिया। उनके मन, वाणी और कर्म में कहीं विरोधभाव नहीं है। वे भारत के गौरव हैं।

स्वामी विवेकानन्द का चिंतन भारतीय जीवन-तत्वों के सारभूत को प्रस्तुत करने वाला है। उनके चिंतन की प्रासंगिकता इस समय इसलिए अधिक महत्त्वपूर्ण है कि वे हमारी आज की जिज्ञासाओं का समीचीन समाधान प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत पाठ उनके दो व्याख्यानों का समवेत रूप है। उन्होंने शिकागो के सुप्रसिद्ध विश्व धर्म सम्मेलन में ये व्याख्यान दिये थे। वे सांप्रदायिकता, हठधर्मिता और वीभत्स धर्मान्धता का विरोध करते हैं, उन्होंने एक ऐसे सुखद भविष्य के प्रति अपनी आशावादिता को प्रकट किया है, जिसमें मनुष्य की पारस्परिक कटुताओं से मुक्त होकर यह संसार एक समुन्नत मानवीय चेतना से परिपूर्ण होगा। वे यह भी मानते हैं कि प्रत्येक धर्म अपनी प्रकृति के अनुसार ही अपना विकास करे, और अपने वैशिष्ट्य की रक्षा भी करता रहे। धर्मों को एक दूसरे धर्म के सम भाग को आत्मसात करके अपने मानवीय आधार का विकास करना चाहिए। उनकी दृष्टि में, ईसाई धर्म को हिन्दू या बौद्ध नहीं हो जाना चाहिए और न हिन्दू अथवा बौद्ध को ईसाई ही। ये व्याख्यान विवेकानन्द के हृदय की अदम्यता और उदारता को व्यक्त करने वाले है।

एक

शिकागो, 11 सितम्बर 1893 ई.

अमेरिकावासी बहनो तथा भाइयो,

आपने जिस सौहार्द्र और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया है, उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा है। संसार में संन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, धर्मों की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ , और सभी सम्प्रदायों एवं मतों को कोटि-कोटि हिन्दुओं की ओर से धन्यवाद देता हूँ।

मैं इस मंच पर बोलने वाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने प्राची के प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के ये लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रसारित करने के गौरव का दावा कर सकते हैं। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने का गर्व का अनुभव करता हूँ,

जिसने संसार को सहिष्णु तथा सार्वभौम स्वीकृति, दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं । मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों को और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट अंश को स्थान दिया था, जिन्होनें दक्षिण भारत में आकर उसी वर्ष शरण ली थी, जिस वर्ष उनका पवित्र मन्दिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने महान् जरथुष्ट्र जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है। भाइयो, मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियाँ सुनाता हूँ, जिसकी आवृत्ति मैं अपने बचपन से कर रहा हूँ और जिसकी आवृत्ति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते हैं।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम् ।

नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णवइव ॥''

–जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न-भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती है, उसी प्रकार हे प्रभो भिन्न-भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जाने वाले लोग अन्त में मुझ में ही आकर मिल जाते हैं ।

यह सभा, जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक है, स्वत: ही गीता के इस अद्‌भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत् के प्रति उसकी घोषणा है:

''ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्या: पार्थ सर्वश:॥''

– जो कोई मेरी ओर आता है, चाहे किसी प्रकार से हो, मैं उसको प्राप्त होता हूँ । लोग भिन्न-भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अन्त में मेरी ही ओर आते हैं ।

साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मान्धता इस सुन्दर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी है तथा इस पृथ्वी को हिंसा से भरती रही है, उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही है, सभ्यता को विध्वस्त करती और पूरे-पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही है। यदि यह वीभत्स दानवी न होती, तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता, पर अब उनका समय आ गया है, और मैं आन्तरिक रूप से आशा करता हूँ कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घण्टाध्वनि हुई है, वह समस्त धर्मान्धता का, तलवार या लेखनी के द्वारा होने वाली उत्पीड़नों का तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारम्परिक कटुताओं का मृत्युनिनाद सिद्ध हो।

दो

(27 सितम्बर, 1893 ई.)

विश्वधर्म महासभा एक मूर्तिमान तथ्य सिद्ध हो गई है, और दयामय प्रभु ने उन लोगों की सहायता की है तथा उनके परम नि:स्वार्थ श्रम को सफलता से विभूषित किया है, जिन्होंने इसका आयोजन किया।

उन महानुभावों को मेरा धन्यवाद है जिनके विशाल हृदय तथा सत्य के प्रति अनुराग ने पहले इस अद्‌भुत स्वप्न को देखा और फिर इसे कार्यरूप में परिणत किया। उन उदार भावों को मेरा धन्यवाद, जिनसे यह सभामंच आप्लावित होता रहा है। इस प्रबुद्ध श्रोतृमण्डली को मेरा धन्यवाद, जिसने मुझ पर अविकल कृपा रखी है और जिसने मत-मतान्तरों के मनोमालिन्य को हल्का करने का प्रयत्न करने वाले प्रत्येक विचार का सत्कार किया है। इस समसुरता में कुछ बेसुरे स्वर भी बीच-बीच में सुने गए हैं। उन्हें मेरा विशेष धन्यवाद, क्योंकि उन्होनें अपने स्वरवैचित्र्य से इस समरसता को और भी

मधुर बना दिया है।

धार्मिक एकता की सर्वसामान्य भित्ति के विषय में बहुत कुछ कहा जा चुका है। इस समय मैं इस सम्बन्ध में अपना मत आपके समक्ष नहीं रखूँगा । किन्तु, यदि यहाँ कोई यह आशा कर रहा है कि यह एकता किसी एक धर्म की विजय और बाकी सब धर्मों के विनाश से सिद्ध होगी तो उनसे मेरा कहना है कि भाई तुम्हारी यह आशा असम्भव है। क्या मैं यह चाहता हूँ कि ईसाई लोग हिन्दू हो जाएँ ? कदापि नहीं । ईश्वर ऐसा न करे। क्या मेरी यह इच्छा है कि हिन्दू या बौद्ध लोग ईसाई हो जाएँ? ईश्वर इस इच्छा से बचाए ।

बीज भूमि में बो दिया गया और मिट्टी, वायु तथा जल उसके चारों और रख दिए गए, तो क्या वह बीज मिट्टी हो जाता है अथवा वायु या जल बन जाता है? नहीं, वह तो वृक्ष ही होता है। वह अपनी वृद्धि के नियम से ही बढ़ता है। वायु, जल और मिट्टी को अपने में पचाकर उनको उद्भिज पदार्थ में परिवर्तित करके एक वृक्ष हो जाता है।

ऐसा ही धर्म के सम्बद्ध में भी है। ईसाई को हिन्दू या बौद्ध नहीं हो जाना चाहिए और न हिन्दू अथवा बौद्ध को ईसाई ही । पर हाँ प्रत्येक को चाहिए कि वह दूसरों के सारभाग को आत्मसात् करे, पुष्टिलाभ करे और अपने वैशिष्ट्य की रक्षा करते हुए अपने निजी वृद्धि के नियम के अनुसार वृद्धि को प्राप्त हो।

इस धर्म महासभा ने जगत् के समक्ष यदि कुछ प्रदर्शित किया है तो यह है "उसने सिद्ध कर दिया है कि शुद्धता, पवित्रता और दयाशीलता किसी सम्प्रदाय विशेष की एकान्तिक सम्पत्ति नहीं है एवं प्रत्येक धर्म ने श्रेष्ठ एवं अतिशय उन्नत चरित्र स्त्री-पुरुषों को जन्म दिया है।"

अब इन प्रत्यक्ष प्रमाणों के बावजूद भी यदि कोई ऐसा स्वप्न देखे कि अन्यान्य सारे धर्म नष्ट हो जाएँगे और केवल उसका धर्म ही जीवित रहेगा, तो उस पर मैं अपने हृदय के अन्तस्तल से दया करता हूँ और उसे स्पष्ट बतलाए देता हूँ कि शीघ्र ही, सारे प्रतिरोधों के बावजूद, प्रत्येक धर्म की पताका पर यह लिखा रहेगा - "सहायता करो, लड़ो मत," परभाव ग्रहण, न कि परभाव-विनाश, समन्वय और शान्ति, न कि मतभेद और कलह ।

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में जन्म लेने पर विवेकानंद जी को क्यों अभिमान है?
2. स्वामीजी ने शिकागो विश्वधर्म सम्मेलन में व्याख्यान के प्रारम्भ में किन शब्दों से श्रोताओं को सम्बोधित किया?
3. शुद्धता, पवित्रता और दयाशीलता के विषय में स्वामीजी ने क्या कहा है?
4. पृथ्वी हिंसा से क्यों भरती जा रही है? कोई दो कारण दीजिए ।
5. स्वामीजी के अनुसार भारत के लोग दूसरे धर्मों को किस रूप में स्वीकार करते हैं ?
6. स्वामीजी के अनुसार शीघ्र ही प्रत्येक धर्म की पताका पर क्या लिखा मिलेगा ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विभिन्न धर्मों के संबंध में स्वामीजी ने क्या विचार दिए हैं ? लिखिए ।

2. साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और धर्मान्धता ने मानवता को क्या हानि पहुँचाई है?

3. लेखक ने बीज के माध्यम से धर्म की किस विशेषता की ओर संकेत किया है?

4. स्वामीजी किस पर अपने हृदय के अंतस्तल से दया प्रदर्शित करते हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. मानव समाज की उन्नति में कौन-कौन से तत्व बाधक रहे हैं ? इन बाधक तत्वों ने कौन-कौन सी हानियाँ पहुँचाई हैं?

2. भारत ने संसार को कौन सी दो बातों की शिक्षा दी है? विस्तार से लिखिए ।

3. निम्नांकित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

   अ . शुद्धता, पवित्रता और दयाशीलता किसी सम्प्रदाय विशेष की एकान्तिक संपत्ति नहीं है। प्रत्येक धर्म ने श्रेष्ठ एवं अतिशय उन्नत चरित्र स्त्री पुरुषों को जन्म दिया है।

   ब. यदि यहाँ कोई ऐसी आशा कर रहा है कि यह एकता किसी खास धर्म की विजय और बाकी सब धर्मों के विनाश से सिद्ध होगी। यह आशा असंभव है।

   स. बीज भूमि में बो दिया गया; और मिट्टी, वायु तथा जल उसके चारों ओर रख दिए गए; तो क्या वह बीज मिट्टी हो जाता है अथवा वायु या जल बन जाता है? नहीं; वह तो वृक्ष ही होता है। वह अपनी वृद्धि के नियम से ही बढ़ता है। वायु, जल और मिट्टी को अपने में पचाकर उनको उद्भिज पदार्थ में परिवर्तित करके एक वृक्ष हो जाता है।

भाषा अध्ययन :

1. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

   धूल में मिलाना , दावा करना, गर्त्त में मिला देना

2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

   नदी, समुद्र, वायु, वृक्ष, मिट्टी, जल

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

   विजय, विनाश, जल, प्रातः, उन्नत ।

इन वाक्यों को देखिए :

1. बच्चे आम खा रहे हैं ।
2. महँगाई के कारण आम आदमी परेशान है।

ऊपर लिखे वाक्यों में एक ही शब्द भिन्न - भिन्न संदर्भ में आया है। इसे अनेकार्थी शब्द कहते हैं। पहले वाक्य में आम का आशय एक प्रकार के फल से हैं। दूसरे वाक्य में आम का अर्थ सामान्य जन से हैं।

परिभाषा : भिन्न-भिन्न संदर्भों में प्रयोग के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देने वाले शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

इसी तरह पाँच अनेकार्थी शब्द खोजकर उनके वाक्य बनाए।

5. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय लिखिए।

   सहिष्णुता, ज्ञापित, बचपन, आन्तरिक, मूर्तिमान

6. निम्नलिखित उपसर्ग जोड़कर दो-दो शब्द बनाइए –

   अ, सम्, सु, अनु, वि, अभि

योग्यता विस्तारः

1. **''जागो! उठो और तब तक चलते रहो जब तक कि लक्ष्य न मिल जाए।''** विवेकानंद के इस सूत्र वाक्य को ध्यान में रखकर बताइए कि आप जीवन में अपने लक्ष्य को पाने के लिए क्या करेंगे? शिक्षक से मार्गदर्शन लेकर लिखिए।
2. स्वामी विवेकानंद के विषय में प्रसिद्ध समुद्र-शिला (सी रॉक) के विषय में जानकारी प्राप्त कर अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

सौहार्द	–	सद्भाव	निमित्त	–	कारण
अवर्णनीय	–	जिसका वर्णन न किया जा सके	परंपरा	–	रिवाज
कतिपय	–	कुछ	वक्ता	–	व्याख्यान देने वाला
सहिष्णुता	–	सहनशीलता	अनुयायी	–	अनुकरण करने वाला
सार्वभौम	–	सारी भूमि से संबंधित	अवशिष्ट	–	बचा हुआ
आवृत्ति	–	दुहराना	स्वतः	–	अपने आप
प्रतिपादन	–	अपनी बात की पुष्टि करना	वीभत्स	–	घृणित
धर्मान्धता	–	धर्म के प्रति कट्टरता	ध्वस्त	–	नष्ट
उत्पीड़न	–	सताना	लक्ष्य	–	उद्देश्य
अग्रसर	–	आगे बढ़ाना	मृत्यु निनाद	–	मृत्यु की आहट
तथ्य	–	सत्य, यथार्थता	निःस्वार्थ	–	बिना स्वार्थ के
सर्वमान्य	–	सभी को स्वीकृत	पराभव	–	पराजय, विनाश
मनोमालिन्य	–	मन का मैलापन	अविकल	–	व्याकुल न रहने वाला
श्रोता मण्डली	–	श्रोताओं का समूह	भित्ति	–	दीवार
आत्मसात्	–	ग्रहण	वैशिष्ट्य	–	विशेषता
स्वर वैचित्र्य	–	स्वरों की विचित्रता	समन्वय	–	मेलभाव
प्रतिरोध	–	विरोध			

❋ ❋ ❋